अध्याय 4: ऐसी भी बातें होती हैं

विषय-सूची 8 प्रश्नावली · 22 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)	7 प्रश्न
प्रश्नावली 4.2	मेरी समझ मेरे विचार	4 प्रश्न
प्रश्नावली 4.3	साक्षात्कार से उभरता व्यक्तित्व	4 प्रश्न
प्रश्नावली 4.4	मेरे प्रश्न (प्रश्न-निर्माण)	2 प्रश्न
प्रश्नावली 4.5	साक्षात्कार की पड़ताल	2 प्रश्न
प्रश्नावली 4.6	व्याकरण की बात — मुहावरे	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.7	शास्त्रीय संगीत — शब्दों के अर्थ	1 प्रश्न
प्रश्नावली 4.8	शब्द-संपदा	1 प्रश्न

प्रश्नावली 4.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क (बहुविकल्पीय)

प्रश्न 1

लता जी ने अपने पिताजी से क्या-क्या सीखा? (क) अनुशासन और नियम के साथ जीना (ख) भय और संशय के साथ जीना (ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना (घ) चतुराई और संयम के साथ जीना

हल

सही उत्तर: (ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना।

साक्षात्कार में लता जी बताती हैं कि पिताजी ने उन्हें स्वाभिमान के साथ जीने की सीख दी — 'अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।' इसके साथ सच्चाई और ईमानदारी भी उनके व्यक्तित्व की नींव बनी।

उन्होंने यह भी कहा कि पिताजी का व्यवहार अनुशासन से भरा था, परंतु वह भय पर नहीं, सम्मान और स्नेह पर आधारित था। इसलिए (ग) सबसे उपयुक्त है।

उत्तर: (ग) स्वाभिमान और सच्चाई के साथ जीना — पिताजी ने लता जी को किसी के आगे न झुकने और सच्चाई से जीने की प्रेरणा दी।

प्रश्न 2

पिताजी की मृत्यु के बाद परिवार सँभालने का लता जी का निर्णय किस जीवन-मूल्य का द्योतक है? (क) संघर्ष (ख) निराशा (ग) भौतिकता (घ) कर्तव्यनिष्ठा

हल

सही उत्तर: (घ) कर्तव्यनिष्ठा।

सन् 1942 में पिता दीनानाथ मंगेशकर की मृत्यु के बाद मात्र 13 वर्ष की आयु में लता जी ने माँ, भाई-बहनों की देखभाल और घर की जिम्मेदारी उठाई।

यह निर्णय संघर्ष भी था, परंतु उसकी मूल भावना कर्तव्यनिष्ठा थी — परिवार के प्रति अपने दायित्व को पूरा करने की अटल इच्छा। इसलिए (घ) सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर है।

उत्तर: (घ) कर्तव्यनिष्ठा — केवल 13 वर्ष की आयु में परिवार का बोझ उठाना उनकी गहरी कर्तव्यभावना को दर्शाता है।

प्रश्न 3

'बिल्कुल ठेठ गँवई अंदाज में यह मंगलागौर का उत्सव मनाया जाता है...' 'मंगलागौर' के वर्णन से भारतीय समाज की कौन-सी परंपरा उजागर होती है? (क) संगीत पर आधुनिकता का प्रभाव (ख) लोकगीतों की लोकप्रियता में कमी (ग) धार्मिक कार्यक्रमों में संगीत का महत्व (घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका

हल

सही उत्तर: (घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका।

मंगलागौर विवाह के बाद महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला उत्सव है जिसमें गीत, नृत्य और सामूहिक आनंद का भाव होता है।

यह उत्सव दर्शाता है कि संगीत केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक जुड़ाव, उत्सव और परंपरा का माध्यम भी है। इसलिए (घ) उपयुक्त है।

उत्तर: (घ) संगीत की महत्वपूर्ण सामाजिक भूमिका — मंगलागौर जैसे लोक पर्व में संगीत समाज को जोड़ने का साधन बनता है।

प्रश्न 4

'गाव गेला वाहुन, नाव गेला राहुन' — इस कहावत का प्रतीकात्मक अर्थ क्या है? (क) नाव गाँव में नहीं रहती, नदी में बहती है। (ख) इस नश्वर संसार में सब कुछ नष्ट हो जाता है। (ग) फिल्मों में गीत गाने से बहुत प्रसिद्धि मिलती है। (घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

हल

सही उत्तर: (घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं।

लता जी स्वयं इस मराठी कहावत का अर्थ बताती हैं — 'गाँव तो बह जाता है, लेकिन जो नाम है, वह रह जाता है।' इसका प्रतीकात्मक अर्थ है कि शरीर और भौतिक वस्तुएँ नश्वर हैं, किंतु मनुष्य के सत्कर्म और नाम अमर रहते हैं। इसलिए (घ) सर्वाधिक उपयुक्त है।

उत्तर: (घ) जीवन अस्थायी है, पर कर्म अमर रहते हैं — यह कहावत मानवीय कर्म और नाम की अमरता को व्यक्त करती है।

प्रश्न 5

कोरस में साथ गाने वाली लड़कियों के साथ लता जी के संबंध कैसे थे? (क) औपचारिक (ख) कामकाजी (ग) आत्मीय (घ) प्रतिस्पर्धात्मक

हल

सही उत्तर: (ग) आत्मीय।

लता जी बताती हैं कि कोरस की लड़कियाँ उनके लिए 'बिल्कुल मेरे घर जैसी थीं', सबका घर में आना-जाना था। मीना की शादी में सभी एकत्र हुए थे। यह संबंध केवल काम तक सीमित नहीं था, बल्कि गहरी मित्रता और पारिवारिक आत्मीयता का था। इसलिए (ग) आत्मीय सही उत्तर है।

उत्तर: (ग) आत्मीय — लता जी कोरस की लड़कियों को अपने घर के सदस्यों जैसा मानती थीं।

प्रश्न 6

लता मंगेशकर के अनुसार बाबा हरिदास और तानसेन की कथाओं से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है? (क) संगीत द्वारा दीपक जलाए जा सकते हैं। (ख) मेघराग गाने से वर्षा होने लगती है। (ग) सुर में वाद्य बजाने से तार टूट जाते हैं। (घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।

हल

सही उत्तर: (घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है।

लता जी कहती हैं कि यह कथाएँ सच हुई होंगी या नहीं, यह वे निश्चित रूप से नहीं कह सकतीं, 'क्योंकि ऐसा मेरा कोई अनुभव नहीं है।'

परंतु वे यह जरूर मानती हैं कि 'संगीत में वह असीम शक्ति है कि कुछ अप्रत्याशित वह जरूर रच देता है।' इसी भाव से (घ) सर्वाधिक उपयुक्त निष्कर्ष है।

उत्तर: (घ) संगीत में अपरिमित शक्ति होती है — लता जी के अनुसार संगीत में असीम शक्ति है जो अप्रत्याशित घटनाएँ रच सकती है।

प्रश्न 7

पूरे साक्षात्कार में लता मंगेशकर की जो छवि बनती है, वह मुख्यतः कैसी है? (क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की (ख) प्रसिद्धि, परिवार को समर्पित और आत्ममुग्ध (ग) कठोर सिद्धांतवादी और व्यावहारिक व्यक्ति (घ) आधुनिकता विरोधी रूढ़िवादी विचारों वाली

हल

सही उत्तर: (क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की।

साक्षात्कार में लता जी सफेद साड़ी और सरल जीवनशैली की चर्चा करती हैं (सादगी)।

वे संगीत और परिवार के प्रति अपनी समर्पण भावना बताती हैं — 13 वर्ष की आयु में घर सँभाला, संगीत को जीवन का मूल्य बनाया।

साथ ही वे स्पष्ट कहती हैं — 'किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं' — जो उनके आत्मसम्मान को दर्शाता है।

इसलिए (क) पूरे साक्षात्कार की केंद्रीय छवि को सर्वोत्तम व्यक्त करता है।

उत्तर: (क) सादगी, समर्पण और आत्मसम्मान की — साक्षात्कार में लता जी की यही त्रिवेणी उजागर होती है।

प्रश्नावली 4.2 — मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1

'पिताजी उस समय पूछते थे, "समझ गए न?"... इसके बाद वे कहते थे कि "अच्छा अब जाओ, बाहर जाकर खेलो।"' यह प्रसंग पारिवारिक अनुशासन और स्नेह के संतुलन का प्रतीक है। कैसे? (संकेत– यहाँ अनुशासन में डर है या सम्मान?)

हल

यह प्रसंग दिखाता है कि पंडित दीनानाथ मंगेशकर का अनुशासन भय पर नहीं, सम्मान और विश्वास पर आधारित था।

जब बच्चे शरारत करते थे, तो पिताजी केवल गंभीरता से देखते थे — बिना चिल्लाए, बिना डाँटे। फिर 'समझ गए न?' पूछकर बात समाप्त कर देते थे और तुरंत खेलने जाने की अनुमति देते थे।

यह स्नेह का प्रतीक है — शरारत की बात को बड़ा न बनाकर, बच्चों के बचपन को बाधित न करना।

अनुशासन में भी उनका प्रेम झलकता था — वे चाहते थे बच्चे अपनी गलती स्वयं समझें, इसीलिए 'समझ गए न?' का प्रश्न किया। डर से नहीं, स्वयं की समझ से सुधार — यही उनका तरीका था।

इस प्रकार एक ओर अनुशासन (गंभीरता से देखना, सीख देना) और दूसरी ओर स्नेह (तुरंत खेलने जाने की छूट) — दोनों का सुंदर संतुलन इस प्रसंग में दिखता है।

उत्तर: इस प्रसंग में अनुशासन भय पर नहीं, सम्मान पर आधारित है। पिताजी बिना दंड दिए 'समझ गए न?' से आत्मसंशोधन सिखाते थे और तुरंत खेलने की छूट देकर स्नेह जताते थे — यही अनुशासन और प्रेम का संतुलन है।

प्रश्न 2

लता मंगेशकर पर अपने पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर के व्यक्तित्व का क्या प्रभाव पड़ा? उनके कौन-कौन से कार्यों और व्यवहार में उनके पिता का प्रभाव दिखाई देता है?

हल

पं. दीनानाथ मंगेशकर का लता जी पर गहरा और बहुआयामी प्रभाव पड़ा।

1. स्वाभिमान: पिताजी ने सिखाया — 'किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं।' इसीलिए लता जी ने अपने करियर में कभी समझौता नहीं किया और सफेद साड़ी जैसी अपनी सादगी बरकरार रखी।
2. संगीत-निष्ठा: मात्र 5 वर्ष की आयु में पिता से संगीत सीखा और जीवनपर्यंत उसे साधना की तरह अपनाया।
3. कर्तव्यनिष्ठा: पिताजी की मृत्यु के बाद 13 वर्ष की आयु में पूरे परिवार की जिम्मेदारी उठाई — यह उनकी पिता की दी हुई कर्तव्य-भावना का प्रतिफल था।
4. विनम्रता और कृतज्ञता: अपने प्रशंसकों के प्रति वे हमेशा आभारी रहीं, जो पिताजी के शिष्टाचार और नम्रता से प्रभावित है।
5. 'नाम आगे बढ़ाना': वे कहती हैं — 'मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।' यह भावना उनके जीवन की प्रेरणाशक्ति बनी।

उत्तर: पं. दीनानाथ के प्रभाव से लता जी में स्वाभिमान, संगीत-समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा, विनम्रता और पिता का नाम आगे बढ़ाने की प्रेरणा विकसित हुई।

प्रश्न 3

'मैंने अपने पिताजी का नाम, थोड़ा ही सही मगर, आगे बढ़ाया।' 'नाम आगे बढ़ाने' का लता जी के लिए क्या अर्थ है? क्या यह सिर्फ प्रसिद्धि पाना है या इससे कोई महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व भी जुड़ा हुआ है?

हल

लता जी के लिए 'नाम आगे बढ़ाना' केवल प्रसिद्धि प्राप्त करना नहीं है।

वे कहती हैं — 'थोड़ा ही सही मगर' — यह विनम्रता दर्शाती है कि उनकी दृष्टि में पिताजी का स्थान सर्वोच्च है।

उनके लिए 'नाम आगे बढ़ाना' का अर्थ है: पिता के आदर्शों — स्वाभिमान, सच्चाई, संगीत-साधना और सादगी — को अपने जीवन में जीना।

इसके साथ उत्तरदायित्व भी जुड़ा है: परिवार को सँभालना, उनके संगीत की परंपरा को जीवित रखना, और करोड़ों श्रोताओं को अपने गायन से प्रेरणा देना।

वे यह भी कहती हैं कि मराठी कहावत के अनुसार 'नाम रह जाता है' — यानी नाम आगे बढ़ाना एक नैतिक दायित्व है जो पीढ़ियों तक चलता है।

उत्तर: 'नाम आगे बढ़ाना' लता जी के लिए प्रसिद्धि नहीं, बल्कि पिता के आदर्शों को जीना और संगीत-परंपरा को संरक्षित करने का उत्तरदायित्व है।

प्रश्न 4

किसी भी कार्य को पूरा करने में सहयोगियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। साक्षात्कार के आधार पर बताइए कि लता जी के अपने सहयोगियों के साथ संबंध कैसे थे?

हल

साक्षात्कार में लता जी सहयोगियों के प्रति अपनी आत्मीयता स्पष्ट व्यक्त करती हैं।

1. कोरस गायिकाएँ: कविता, गांधारी, कल्याणी, सुमन और रेखा जैसी कोरस गायिकाओं के साथ उनका संबंध पारिवारिक था — 'बिल्कुल मेरे घर जैसी थीं।' वे स्टूडियो में जमीन पर बैठकर उनसे बातें करती थीं।

2. संगीत निर्देशक: नौशाद, मदन मोहन, शंकर-जयकिशन, एस.डी. बर्मन, आर.डी. बर्मन, लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल — इन सबके साथ उनका सम्मान और सहयोग का रिश्ता था।

3. साथी गायक: मुकेश भैया और किशोर कुमार के साथ उनके गीत कोरस सहित रिकॉर्ड होते थे, जो सामूहिक प्रयास का प्रतीक है।

4. 1960 से 1980 तक लगभग दो दशकों तक एक ही कोरस ग्रुप के साथ काम करना दर्शाता है कि संबंध टिकाऊ और विश्वास पर आधारित थे।

उत्तर: लता जी के सहयोगियों — संगीतकारों, कोरस गायिकाओं और सह-गायकों — के साथ संबंध आत्मीय, पारिवारिक और दीर्घकालीन सहयोग पर आधारित थे।

प्रश्नावली 4.3 — साक्षात्कार से उभरता व्यक्तित्व

प्रश्न 1

साक्षात्कार से चुनी गई पंक्ति: 'मुझे अपने गाने और रिकॉर्डिंग के अलावा किसी दूसरी चीज की सुध नहीं रहती थी।' — इस पंक्ति से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-से गुण उभरते हैं? (दृढ़ता, कृतज्ञता, दार्शनिकता, समर्पण, उत्तरदायित्व, स्पष्टता, एकाग्रता, साधना, स्पष्टवादिता, विनम्रता, कठोरता, सरलता, आत्मविश्वास, उत्सवप्रियता, श्रद्धा, मानवता, अमरता, घमंड, स्वाभिमान में से चुनें)

हल

इस पंक्ति से मुख्यतः निम्नलिखित गुण उभरते हैं—

1. एकाग्रता: गाने और रिकॉर्डिंग के अतिरिक्त अन्य किसी वस्तु का ध्यान न रहना, पूर्ण मानसिक एकाग्रता को दर्शाता है।
2. समर्पण: संगीत के प्रति इतना पूर्ण समर्पण कि अन्य सांसारिक बातें गौण हो जाती थीं।
3. साधना: केवल गाना-रिकॉर्डिंग — यह किसी तपस्वी की भाँति साधना का भाव है।

इन तीनों गुणों का संगम इस एक पंक्ति में है।

उत्तर: एकाग्रता, समर्पण और साधना — ये तीन गुण इस पंक्ति में उभरते हैं।

प्रश्न 2

साक्षात्कार से चुनी गई पंक्ति: 'अगर कोई बात तुम्हें सही लगती है, तो उसे करो और किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं है।' — इस पंक्ति से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-से गुण उभरते हैं?

हल

यह पंक्ति पिताजी की सीख के रूप में लता जी ने उद्धृत की है, जो उनके जीवन का आधार बनी।

1. स्वाभिमान: 'किसी के आगे झुकने की जरूरत नहीं' — यह आत्मसम्मान और स्वाभिमान का स्पष्ट संकेत है।
2. स्पष्टवादिता: अपनी बात को सीधे और बिना लाग-लपेट के कहना — इस गुण की झलक मिलती है।
3. दृढ़ता: सही को सही मानकर उस पर अडिग रहना — यह दृढ़ता का प्रतीक है।

उत्तर: स्वाभिमान, स्पष्टवादिता और दृढ़ता — ये गुण इस पंक्ति में उभरते हैं।

प्रश्न 3

साक्षात्कार से चुनी गई पंक्ति: 'आप जैसे लोग अगर यह मानते हैं कि मैं अमर हूँ, तो यह मुझे मिलने वाले उस प्यार जैसा ही है।' — इस पंक्ति से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-से गुण उभरते हैं?

हल

1. विनम्रता: 'अमर' कहे जाने पर भी वे इसे प्रशंसकों के प्रेम तक सीमित करती हैं — अहंकार बिल्कुल नहीं।
2. कृतज्ञता: प्रशंसकों के प्रेम को 'उपहार' मानना और उसके प्रति आभार व्यक्त करना।
3. मानवता: वे अपनी महानता के बजाय श्रोताओं के प्रेम को महत्व देती हैं — यह मानवीय दृष्टिकोण है।

उत्तर: विनम्रता, कृतज्ञता और मानवता — ये गुण इस पंक्ति में उभरते हैं।

प्रश्न 4

साक्षात्कार से चुनी गई पंक्ति: 'मेरा गाना अमर है, पर शरीर तो अमर नहीं।' — इस पंक्ति से लता मंगेशकर के व्यक्तित्व के कौन-से गुण उभरते हैं?

हल

1. दार्शनिकता: जीवन की नश्वरता और कर्म की अमरता पर इस गहरे भाव से सोचना दार्शनिक दृष्टि का परिचय देता है।
2. आत्मविश्वास: यह विश्वास कि उनका गाना अमर रहेगा — यह स्वयं की कला पर आत्मविश्वास है।
3. सरलता: शरीर की नश्वरता को इतने सहज भाव से स्वीकारना सरलता और निर्भयता का प्रतीक है।

उत्तर: दार्शनिकता, आत्मविश्वास और सरलता — ये गुण इस पंक्ति में उभरते हैं।

प्रश्नावली 4.4 — मेरे प्रश्न (प्रश्न-निर्माण)

प्रश्न 1

नीचे दिए गए उत्तर के आधार पर कम से कम दो प्रश्न बनाइए— उत्तर: 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच गीत, नृत्य और सौहार्द का भाव झलकता था।

हल

इस उत्तर से निम्नलिखित प्रश्न बनाए जा सकते हैं—
प्रश्न 1: 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच कौन-सा भाव झलकता था?
प्रश्न 2: 'मंगलागौर' उत्सव में क्या-क्या होता था?
प्रश्न 3: लता जी ने किस लोक पर्व का वर्णन करते हुए स्त्रियों में गीत, नृत्य और सौहार्द का उल्लेख किया?
प्रश्न 4: भारतीय लोक पर्वों में सामूहिक सहभागिता का क्या महत्व है?

उत्तर: दो प्रश्न: (1) 'मंगलागौर' जैसे लोक पर्वों में स्त्रियों के बीच कौन-सा भाव झलकता था? (2) 'मंगलागौर' उत्सव में क्या-क्या होता था?

प्रश्न 2

नीचे दिए गए उत्तर के आधार पर कम से कम दो प्रश्न बनाइए— उत्तर: लता जी का मानना था कि तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों की सादगी और गायकी अद्वितीय थी।

हल

इस उत्तर से निम्नलिखित प्रश्न बनाए जा सकते हैं—
प्रश्न 1: लता जी का पुराने संगीतकारों के बारे में क्या मानना था?
प्रश्न 2: तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों में क्या अद्वितीय था?
प्रश्न 3: लता जी ने पुराने दौर की संगीत-परंपरा की किस विशेषता को आज भी अनुपम माना?
प्रश्न 4: क्या तकनीक संगीत की सादगी और गायकी की जगह ले सकती है — इस विषय में लता जी का क्या विचार था?

उत्तर: दो प्रश्न: (1) लता जी का पुराने संगीतकारों के बारे में क्या मानना था? (2) तकनीकी प्रगति के बावजूद पुराने संगीतकारों में क्या अद्वितीय था?

प्रश्नावली 4.5 — साक्षात्कार की पड़ताल

प्रश्न 1

'ऐसी भी बातें होती हैं' एक साक्षात्कार है। साक्षात्कार के निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं को रेखांकित करने वाली पंक्तियाँ इस साक्षात्कार में से ढूँढ़कर लिखिए— • साक्षात्कार लेने वाले का नाम और जिसका साक्षात्कार लिया गया, उसका नाम • प्रश्नोत्तर • भावनात्मक वातावरण • आमंत्रण, स्वागत और परिचय • उत्तर देने की शैली का संकेत • विचार और उदाहरण • संस्मरण • समापन

हल

1. साक्षात्कार लेने वाले और जिनका साक्षात्कार लिया गया: 'यतींद्र मिश्र : दीदी, आपके संगीत की अप्रतिम यात्रा पर बातचीत शुरू करते हैं...' — यतींद्र मिश्र साक्षात्कारकर्ता, लता मंगेशकर साक्षात्कृत।
2. प्रश्नोत्तर: 'यतींद्र मिश्र : आपके पिताजी पं. दीनानाथ मंगेशकर की वे कौन-सी स्मृतियाँ हैं, जो आज भी आपके स्मरण में जीवित हैं? ... लता मंगेशकर : कई बातें हैं।'
3. भावनात्मक वातावरण: 'लता मंगेशकर : (हँसते हुए) हमारे यहाँ होली और दीवाली पर तो इस तरह घरों में गीत नहीं होता।' — हँसना भावनात्मक उष्णता का संकेत है।
4. आमंत्रण, स्वागत और परिचय: 'आप अगर तैयार हों, तो मैं ऐसे असंख्य शुभचिंतकों... की ओर से प्रणाम करते हुए आपसे प्रश्न पूछना चाहूँगा...' — यतींद्र मिश्र का आमंत्रण। 'जी, जरूर। आपका बेहद शुक्रिया...' — लता जी का स्वागत।
5. उत्तर देने की शैली का संकेत: 'मैं कोशिश करूँगी कि जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है, उसे आपको बता सकूँ।' — आत्मीय और खुलकर बोलने की शैली का संकेत।
6. विचार और उदाहरण: 'मेरे लिए भी यह कम चुनौती की बात नहीं कि मैं अनिल विश्वास की धुनों जैसा काम रहमान के साथ कर रही होती...' — पुराने और नए संगीत की तुलना पर विचार।
7. संस्मरण: 'आपको एक वाकया बताती हूँ। मैं मुंबई में उस्ताद अली अकबर खाँ और पंडित रविशंकर का एक कंसर्ट सुन रही थी...' — यह संस्मरण है।
8. समापन: 'हे प्रभु! तुमने जो भी दिया, वह बहुत दिया, दूसरों से कहीं ज्यादा दिया। अपनी कृपा की छाया से जैसे मुझे छाँह दी है, वैसे ही हर एक कलाकार और नेक इंसानों के ऊपर भी रखना... यही प्रार्थना है।'

उत्तर: आठों बिंदुओं के उदाहरण साक्षात्कार में मिलते हैं — आमंत्रण (यतींद्र मिश्र का प्रणाम), स्वागत (लता जी का 'जी, जरूर'), प्रश्नोत्तर (पूरा संवाद), संस्मरण (अली अकबर खाँ का वाकया), समापन (लता जी की प्रार्थना)।

प्रश्न 2

'मैं कोशिश करूँगी कि जो कुछ भी मैंने संगीत में रहते हुए जाना है, उसे आपको बता सकूँ।' इस कथन से साक्षात्कार की शैली के विषय में क्या पता चलता है — क्या यह औपचारिक संवाद है या आत्मीय बातचीत? अपने विचार तर्क सहित लिखिए।

हल

यह कथन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि यह साक्षात्कार आत्मीय बातचीत है, न कि औपचारिक संवाद।
तर्क 1 — व्यक्तिगत अनुभव साझा करने की तत्परता: 'जो कुछ भी मैंने... जाना है, उसे आपको बता सकूँ' — यह केवल सूचना देना नहीं, बल्कि अपना जीवन-अनुभव खोलकर रखना है। यह औपचारिक उत्तरों में नहीं होता।
तर्क 2 — 'दीदी' संबोधन: यतींद्र मिश्र लता जी को 'दीदी' कहकर बुलाते हैं और वे सहजता से इसे स्वीकार करती हैं — यह घनिष्ठता का संकेत है।
तर्क 3 — हँसते हुए, संस्मरण सुनाना, 'बहुत शुक्रिया': ये सब शैली के आत्मीय होने के प्रमाण हैं।
तर्क 4 — प्रश्नकर्ता की विनम्रता: 'करोड़ों प्रशंसकों की ओर से प्रणाम करते हुए' — यह औपचारिकता नहीं, श्रद्धावनत निकटता है।
इस प्रकार यह साक्षात्कार एक साक्षात्कार की तकनीकी सीमा में रहते हुए भी मूलतः दो सहृदय व्यक्तियों की आत्मीय बातचीत है।

उत्तर: यह औपचारिक संवाद नहीं, आत्मीय बातचीत है — 'दीदी' संबोधन, व्यक्तिगत संस्मरण, हँसते हुए उत्तर और अनुभव खुलकर साझा करने की भावना इसकी आत्मीय शैली के प्रमाण हैं।

प्रश्नावली 4.6 — व्याकरण की बात — मुहावरे

प्रश्न 1

नीचे दिए गए मुहावरों का प्रयोग करते हुए वाक्य बनाइए— • हाथ में आना • हाथ का मैल होना • हाथ से हाथ मिलाना • हाथ साफ करना • हाथ से निकल जाना • हाथ धो बैठना

हल

1. हाथ में आना (अधिकार में आना / मिलना): बरसों की मेहनत के बाद आखिरकार सफलता उसके हाथ में आ ही गई।
2. हाथ का मैल होना (महत्वहीन / तुच्छ समझना): सच्चे कलाकार के लिए पैसा हाथ का मैल होता है — वे अपनी कला से कभी समझौता नहीं करते।
3. हाथ से हाथ मिलाना (सहयोग करना / साथ देना): आओ, हम सब हाथ से हाथ मिलाकर इस समस्या का हल निकालें।
4. हाथ साफ करना (चुरा लेना / ठग लेना): बाजार की भीड़ में किसी ने उसका पर्स उड़ाकर हाथ साफ कर दिया।
5. हाथ से निकल जाना (नियंत्रण से बाहर हो जाना): यदि समय पर ध्यान न दिया गया तो स्थिति हाथ से निकल जाएगी।
6. हाथ धो बैठना (सदा के लिए खो देना): लापरवाही के कारण वह अपनी नौकरी से हाथ धो बैठा।

उत्तर: छह मुहावरों का वाक्यों में सफल प्रयोग — हाथ में आना (सफलता मिलना), हाथ का मैल (तुच्छ), हाथ से हाथ मिलाना (सहयोग), हाथ साफ करना (चुराना), हाथ से निकलना (बेकाबू होना), हाथ धो बैठना (खो देना)।

प्रश्नावली 4.7 — शास्त्रीय संगीत — शब्दों के अर्थ

प्रश्न 1

पाठ में संगीत से जुड़े अनेक शब्दों को पढ़ा है। इनके अर्थ और उदाहरण लिखिए— राग, सुर, बंदिश, अभंग, सोहर, फाग, बधावा

हल

1. राग — भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक विशेष ध्वनि-योजना जो कुछ निश्चित स्वरों के आरोह-अवरोह से बनती है। उदाहरण: राग भैरवी प्रातःकाल गाया जाने वाला राग है।
2. सुर — वह ध्वनि जो संगीत में प्रयुक्त होती है; एक निश्चित आवृत्ति की मधुर ध्वनि। उदाहरण: उस्ताद अली अकबर खाँ इतने सुर में बजा रहे थे कि सरोद का तार टूट गया।
3. बंदिश — भारतीय शास्त्रीय संगीत में किसी राग पर आधारित रचना जिसमें शब्द और स्वर का संयोजन होता है। उदाहरण: उस्ताद ने राग यमन की एक सुंदर बंदिश प्रस्तुत की।
4. अभंग — महाराष्ट्र के संत कवियों (जैसे संत तुकाराम) की भक्ति रचनाएँ जो मराठी में होती हैं। उदाहरण: संत तुकाराम के अभंगों में विठ्ठल की भक्ति का गहरा भाव है।
5. सोहर — बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला मंगलगीत। उदाहरण: गाँव में बेटे के जन्म पर महिलाओं ने मिलकर सोहर गाया।
6. फाग — फागुन (होली) के अवसर पर गाया जाने वाला लोकगीत। उदाहरण: होली पर ब्रज में फाग के गीत गूँजते हैं।
7. बधावा — मंगलाचार के रूप में, विशेषकर बच्चे के जन्म आदि शुभ अवसरों पर भेजी जाने वाली बधाई या गाया जाने वाला गीत। उदाहरण: पड़ोसियों ने नवजात के स्वागत में बधावा गाया।

उत्तर: राग (ध्वनि-योजना), सुर (मधुर ध्वनि), बंदिश (राग पर आधारित रचना), अभंग (मराठी भक्ति-पद), सोहर (जन्म पर मंगलगीत), फाग (होली का लोकगीत), बधावा (शुभ अवसर पर मंगलाचार गीत)।

प्रश्नावली 4.8 — शब्द-संपदा

प्रश्न 1

पाठ में दिए गए निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए— अप्रतिम, आकंठ, समर्पित, स्मरण, रागदारी, राग, स्वाभिमान, बैकुंठ, अनुयायी, मार्फत/मारफत, सबब, अलबत्ता, सूत्रपात, आमद, पाश्र्वगायन/पाश्र्वगायक, परहेज, वाकया/वाकिया, खैरियत, फाग, धमार, सोहर, बधावा, मसलन, अप्रत्याशित, अतिरेक, वाजिब

हल

1. अप्रतिम — बेजोड़, अनुपम; जिसकी तुलना न हो सके।
2. आकंठ — कंठ तक, पूर्ण रूप से; पूरी तरह डूबा हुआ।
3. समर्पित — समर्पण किया हुआ, दिया हुआ, सौंपा हुआ।
4. स्मरण — याद, स्मृति, चिंता।
5. रागदारी — ठीक राग गाने का ढंग या क्रिया; शास्त्रीय संगीत गायन की शैली।
6. राग — विशिष्ट ताल-लययुक्त ध्वनि; मन को प्रसन्न करना; प्रीति, अनुराग।
7. स्वाभिमान — आत्मसम्मान, अपनी प्रतिष्ठा का अभिमान।
8. बैकुंठ — स्वर्ग; एक ताल; संगीत।
9. अनुयायी — पीछे चलने वाला, अनुगामी, समान विचार रखने वाला।
10. मार्फत/मारफत — माध्यम, ज्ञान; के द्वारा।
11. सबब — कारण, हेतु।
12. अलबत्ता — निस्संदेह, बेशक।
13. सूत्रपात — कार्य का आरंभ; माप वाले सूत से मापन का कार्य।
14. आमद — आय, आना।
15. पाश्र्वगायन/पाश्र्वगायक — किसी अन्य अभिनेता/अभिनेत्री के बदले में नेपथ्य में बैठकर गाने वाला; स्वरदान करने वाला।
16. परहेज — किसी वस्तु से बचना; बीमार का हानिकर पदार्थ न खाना।
17. वाकया/वाकिया — घटना, दुर्घटना।
18. खैरियत — कुशल, भलाई, नेकी।
19. फाग — फागुन में गाया जाने वाला गीत; फागुन में होने वाला राग-रंग, होली।
20. धमार — फाग का एक भेद (संगीत); एक ताल।
21. सोहर — बच्चे के जन्म के अवसर पर गाया जाने वाला एक मंगलगीत।
22. बधावा — मंगलाचार, बधाई; बच्चे के जन्म आदि के अवसर पर भेजा जाने वाला उपहार।
23. मसलन — उदाहरण रूप में।
24. अप्रत्याशित — जिसकी आशा न रही हो, अनसोचा, आकस्मिक।
25. अतिरेक — आवश्यकता से अधिक, अंतर, आधिक्य।
26. वाजिब — उचित, कर्तव्य।

उत्तर: सभी 26 शब्दों के अर्थ पाठ की शब्द-संपदा सूची के अनुसार — अप्रतिम (बेजोड़), आकंठ (पूर्ण रूप से), बैकुंठ (स्वर्ग, एक ताल, संगीत), मसलन (उदाहरण के रूप में), वाजिब (उचित) आदि।